

पञ्चमस्कंध - १

प्रश्न-पेपर 10

कुल मार्क्स 50

प्रश्न १ नीचेना पदवाली गाथानो अर्थ लखी । गमे ते - ५

10 मार्क्स

- (1) एत्थ (2) लह्मीए (3) संतेव
(4) छल्लेसा (5) रवाइय

प्र. २ नीचेना भाव दशावली गाथा लखी (मूल) गमे ते - ५

10 मार्क्स

- (1) पाणीमां उपयोग वतावती गाथा
(2) उपमत्त मुनिमां योग वतावती गाथा
(3) मिश्रदृष्टि मां उपयोग " "
(4) १० जीवभेद घटे एवी मार्गणा वतावती गाथा
(5) ज्ञानादि मार्गणामां जीवभेदो " "

प्र. ३ नीचेना प्रश्नेना जवाब आपौ । गमे ते १०

२० मार्क्स

- (1) वीरं पूर्वं जिणं विशेषण छे ते 'दुट्टकम्मनिट्टवगं' नी शी जरूर ?
'दुट्टकम्मनिट्टवगं' छे ते पछी 'जिणं' नी शी जरूर ?
(2) इन्द्रिय, कय, कषाय, मनः पर्यवज्ञान नी व्युत्पत्ति अर्थ जणावौ !
(3) ज्ञान मार्गणामां तेनी उलिपक्षी अज्ञान मार्गणानु ग्रहण शा मटे ? ते जणावी
छेदोपस्थापनीय चारित्र नी अर्थ लखी प्रकारे जणावौ !
(4) सामायिक कैटला प्रकारे ? अभव्य ने कय सामायिक छै ? तेनाथी तेने शुं लाभ थाय ?
(5) मिथ्यात्व गुणठाणे त्रण करण क्यां क्यां सुधी उवर्त्ते ? तथा यथाप्रवृत्ति,
अपूर्वकरण - अनिवृत्तिकरण नुं फल शुं ?
(6) गुणनी दृष्टि ए अने कालनी दृष्टि ए मिथ्यात्व ना कैटला प्रकार ते जणावी
सास्वादन सम्यक्त्वथी आत्माने शुं नुकसान थाय ते जणावौ !
(7) गुणश्रेणी एटले शुं ? तेमां दालकोनी गोठवण क्यांथी क्यां सुधी थाय छे ते जणावी
गुणश्रेणी थी शुं फायदे थाय ते जणावौ !
(8) उपशम सम्यक्त्वनी प्राप्ति पूर्वं मिथ्यात्वनी प्रथम स्थिति वेदतां जीव कया कार्यो
करे छे ? तथा उपशम सम्यक्त्व प्राप्त कर्या पछी जीव कया कार्यो न करे ?
(9) ७, ६, ५ उपयोग छै एवी कैटली मार्गणा ? तथा 13 योग छै एवी कैटली मार्गणा ?
(10) सर्वाविरतिधर साधवीजी म., कृष्ण महाराजा तथा मुमुक्षु (दीक्षार्थी) आत्मां
योग, उपयोग घटावौ !
(11) संख्यानी दृष्टि ए समान योगवाला गुणस्थानक जणावी, बीजा गुणस्थानके
घटती मार्गणा जणावौ !
(12) 3, 2, 1 जीवभेद छै एवी कैटली मार्गणा ते जणावौ !
प्र. 4 रवाली जगया पूरो (गमे ते 5)

5 मार्क्स

- (1) यथारव्यात चारित्र नुं बीजु नाम - - - - छे ।

- (२) अपूर्वकरण गुणठाणा लुं बीजु नाम _____ है।
 (३) मातृज्ञान लुं पर्यायवाची नाम _____ है।
 (४) 14 जीवभेद घटे एवी कुल _____ मार्गणा है।
 (५) चंद्रकौरीकने मरणांत अवस्थाभां _____ गुणठाणु होय छे।
 (६) केवलज्ञानना पर्यायवाची नामो _____ है।

उ. 5 सत्य उल्लेख करो गने ते - 5 5 मार्ग

- (1) अपूर्वकरण गुणठाणे सर्वजीवनी अपेक्षाए, अद्यवसायस्थानो सर्वजीवसमान अनंतगुण
 छे। बादर संपराय गुणठाणे गुणस्थानकना समयो प्रमाण अद्यवसाय स्थानो छे।
 (२) चारित्र मोहनीयनी उपशमना मोहनीयना उदय थी थाय छे, उपशांत दलिकौमां
 रसोदय उवर्तनी नथी परंतु उदेशोदय उवर्त छे।
 (३) चूडेल अथवा रवडमांकडीने 6 पर्याप्ति घटे छे।
 (४) हालमां आपणने छे आहार घटे छे।
 (५) मच्छरने 3 योग, 3 उपयोग, 3 गुणस्थानक घटे छे।
 (६) 4 जीवभेद घटे एवी कुल 8 मार्गणा छे।

उत्तर उ. १ (1) गाथा-3 (२) गा. 7 (3) गा. 15 (4) गा. 29 (5) गा. 3१

उ. २ (1) गा. 13 (२) गा. 17 (3) गा. २० (4) गा. २3 (5) गा. २6

उ. 3 (1) गा. १ (२) गा. ४ (3) गा. ४ (4) सारसंग्रह उश्नोत्तरी

(5) (6) (7) (8) गुणस्थानकनुं स्वरूप (9) गाथा 13, 14, 1२

- (10) सर्वविरतिधर साध्वीजी म. ने 13 योग घटे एवी 10 मार्गणा - गाथा 1३ तिर्यग्गति वि.
 योग ११ अथवा 9 उप. 7 अथवा 6 9 उपयोग " " 5 " उगति, सायिक सम्य.
 कृष्ण महाराजा ने योग १० उप. 6 6 " " " २ " देशविरति, मिश्र यथा. चारित्र
 दीक्षार्थी ने योग देशविरते - 4 " " " १ " असंती
 योग-११ उपयोग-6 (उज्ञान-उश्नि)

(11) गाथा 16-17

१, २, ५, 6 = 13 योग १ = २, 5 उपयोग 3 अज्ञान - २ दर्शन

४ थी 1२ - 5 योग 4-5, 6 " 3 ज्ञान - 3 "

5 थी 7 ११ योग 6 थी 1२, 7 " 4 " - 3 "

२ जा गुणठाणे घटती मार्गणा - एकै. विकले, पृथ्वी, अप., वन.

(1२) 3 जीवभेद घटे एवी - २ मार्गणा - अनुव्यगति, तेजो लेश्या

२ " " 13 " - देव-नरकगति, माती-श्रुतज्ञान, अवाधदिक, सा. साधो. ओ. सम्य.

१ " " 10 " - २ लेश्या, विभंगज्ञान, संदी

5 संयम, कै. दिक, मनःज्ञान, देशविरति, मिश्र

प्र. 4 ना उत्तर (1) ^य धारव्यात (2) निवृत्त (3) आभिनिव्यौधिक
(4) १४ (5) 5 मुं (6) शुद्ध, सकल, असाधारण, अनंत
निव्यघात।

प्र. 5 (1) अपूर्वकरणे अध्यवसायी असंख्यलोकाकाश उद्देश उभाण
(2) चारित्र मोहनीयनी उपसमना मोहनीयना उपसम थी थाय के।
उपशांत दालेकौमां रसोदय के उदेशोदय होतो नथी।
(3) चूडेल बेर. के, भूतपण के, बेर. नी अपेक्षाए 5 पर्याप्ते घटे, भूत नी अपेक्षाए
6 पर्याप्ते घटे। स्वडमांकडी चउ. - 5 पर्याप्ते घटे।
(5) मच्छरने 4 योग - 3 उपयोग, 2 उफान (मार्ति-श्रुत) 2 दरनि (चहु-मचक्षु)
(6) चार जीवभेद घटे एवी - १० भागिणा।

प्रश्न-पैपर-9 पंचसंगह द्वार-3 नी जवाब-पत्र

प्र. 9 १/65 २/51 3/26 4/12 5/58

प्र. 2 १/45 २/40 3/29 4/15 5/4

प्र. 3 (१) पाना नं. २४५ - २४६ (२) २४७ - २४८

(५) चारित्रमोहनीयनी झयोपशम तथा गुर्ने लामान्तरायनी झयोपशम

(६) २७४ फ्रुटनोध (७) ३०७ (८) ५१६ प्रश्न - ३३

(९) ३६६ (गा-६०) ३६१ (१-२)

प्र. 4 १ गा - ३६ पाना ३५७

२ अंतराय तथा पराघात

३ ३३७ फ्रुटनोध

४ ३३४ "

५ गाथा - ६६ - ६५